Dainik Bhaskar 8.1.4.99 कर्कटोल भोपाल (वॉक्स)

आयुर्वेद ने जगाई कैंसर निदान की आशा

कैंसर एक असाध्य और लगभग लाइलाज रोग है। इसके नाम से ही मरीज और उसके परिजन तमाम आशंकाओं, कुशंकाओं के अथाह सागर में डूबने-उतरने लगते हैं। जैसा कि माना जाता है और सिद्ध भी है कि भारतीय चिकित्सा पद्धति (आयुर्वेद) में तमाम असाध्य रोगों का अचूक इलाज समाहित है, बस जरूरत है इन्हें ढूंढ़ निकालने की और ऐसा ही एक विलक्षण प्रयास किया है जयपुर के एक वैद्य डॉ. नंद लाल तिवारी ने। वैद्य जी ने 20-25 वर्षों की अनवरत साधना के बाद विभिन्न जड़ी-बूटियों के मिश्रण से कैंसर की अत्यंत प्रभावशाली और नायाब दवा इजाद की है। इसके सेवन से अनेक रोगी मौत के दरवाजे से जीवन के आंगन में लौट आए हैं। उन्होंने आयुर्वेदिक जड़ी बूटियों से तैयार अपनी दवा का नाम 'कर्कटोल' रखा है और राजस्थान सरकार से इसके निर्माण की बाकायदा अनुमति भी ली है। आज पूरी दुनिया में कैंसर जैसे घातक व असाध्य रोग पर पूर्णत: विजय प्राप्त करने के लिए कारगर औषधि की खोज की जा रही है, परंतु दुर्भाग्यवश अभी तक किसी वैज्ञानिक को ऐसी किसी भी दवा के सूत्र का पता नहीं चला है जिससे इस जानलेवा रोग पर पूरी तरह से काबू पाया जा सके।

डॉ. तिवारी ने 1960 से 1962 तक और फिर 1963 से 1971 तक दार्जिलिंग के चाय बगानों में और जंगली वनस्पतियों पर गहन अध्ययन किया। जंगलों में औषधियों का भंडार है और आदिवासी लोग इस परंपरा का लाभ लेते रहे हैं और डॉ. तिवारी ने व्यवस्थित ढंग से इसे नया आयाम दिया। उन्होंने काफी प्रयासों के बाद आठ वनस्पतियों का एक शुद्ध मिश्रण तैयार किया है। इन औषधियों का केन्द्र सरकार की ओर से मान्यता प्राप्त ग्रंथों में उल्लेख है, परंतु यह प्रमाणित नहीं है कि इनका उपयोग कैंसर जैसे घातक रोग के लिए हो सकता है। इन्होंने इनका परीक्षण कर एक यौगिक तैयार किया और पहली बार एक जीभ के कैंसर के मरीज पर इसका परीक्षण किया। परीक्षण काफी हद तक सफल रहा और फिर जन कल्याण का सिलसिला चल पड़ा। पिछले 15 वर्षों के दौरान भारत ही नहीं बल्कि अमरीका, इंग्लैंड, जर्मनी और कनाडा आदि देशों से उनके पास मरीज आने लगे।

डॉ. तिवारी अब नियमित रूप से लंदन और अन्य बड़े विदेशी शहरों में जाकर अपनी सेवाएं दे रहे हैं। लंदन की एक सामाजिक संस्था ने यहां आकर उनके काम पर फिल्म बनाई और लंदन के एक स्थानीय टीवी ने उन पर आधे घंटे का एक इंटरव्यू कार्यक्रम प्रसारित किया। लेकिन डॉ. तिवारी ने अपना पेटेंट विदेशों में नहीं दिया है वे इसे अपने देश को ही सौंपना चाहते हैं। डॉ. तिवारी के पास 90 प्रतिशत मरीज ऐसे आते हैं, जिन्हें हर तरह के इलाज के बाद अस्पतालों से यह कह कर लौटा दिया जाता है कि अब सिर्फ भगवान का नाम लो। डॉ. तिवारी का यह दावा कभी नहीं रहा कि इनकी दवा से सभी मरीज ठीक हो जाएंगे, लेकिन आखिरी स्टेज के 40-50 प्रतिशत मरीजों को पूर्ण आराम मिला है। उनके इलाज से भोजन नली ओर ब्लड कैंसर के मरीजों को विशेष फायदा हुआ है।

आधे मरीज ऐसे भी हैं जिन्हें आशानुरूप आराम नहीं मिला, लेकिन जहां 5 से 10 प्रतिशत रोगियों को उन्नत इलाज के बाद लाभ हो रहा है वहां यह आंकड़ा काफी मायने रखता है। डॉ. तिवारी का मानना है कि यदि इसके लक्षणों के आधार पर इलाज प्रारंभ कर दिया जाए तो इसकी आखिरी स्टेज की तकलीफों से बचा जा सकता है। अब डॉ. तिवारी एक हर्बल मिश्रण तैयार करने की दिशा में भी कार्य कर रहे हैं, जिसको जीभ पर लगाते ही यह पता चल जाएगा कि रोगी को कैंसर है या नहीं। यदि उनका यह अनुसंधान सफल रहा तो कैंसर चिकित्सा के क्षेत्र में यह एक मील का पत्थर साबित होगा। लंदन की लाइन मार्टिन एंड रेड फोर्ड लेबोरेटरी ने डॉ. तिवारी द्वारा तैयार यौगिक का परीक्षण कर इसे निर्दोष करार दिया है। दवा विश्लेषक केरोल आर. ब्यायनेट ने दवा के सैंपल को काफी बारीक विश्लेषण के बाद संतोषजनक करार देते हुए अपनी रिपोर्ट में कहा कि इसका मानव शरीर पर कोई दुष्परिणाम नहीं होगा।